दिनेश सागर की कवितायें

हम लौटेंगे एक दिन

हम लौटेंगे एक दिन
जैसे लौटता है हड्डियों में छिपा ज्वर
जैसे लौटते हैं मज़दूर अपने घरों की ओर
लौटती है चिड़िया, अपने घौंसले में शाम होने से पहले,

हम लौटेंगे एक दिन
जैसे बाज़ार से घर लौट आते हैं पिताजी शाम तक
जैसे लौटती है हरेक शाम ढ़लने से पहले आँगन में धूप
लौटते हैं घर बच्चे, शाम होने से पहले स्कूल से पढ़कर,

हम लौटेंगे एक दिन
जैसे लौटते हैं अपनी राह पर भटके हुए मुसाफ़िर
जैसे लौटती है अंतिम स्टेशन से लौह पथगामिनी
लौटते हैं हर साल सभी मौसम फिर से,

हम लौटेंगे एक दिन
लौटेंगे स्वप्नलोक से यथार्थ के धरातल पर
वर्षों बिताये शहरों से अपने-अपने गाँवों की ओर
हम लौटेंगे जरूर एक दिन ...।

कौन जानता है कि

कौन जानता है कि
जिससे दिन भर खूब बातें की
न जाने किस समय उसे अलविदा कह जाऊँगा।

कौन जानता है कि
कल तक जो चिड़िया बैठती थी घर की मुंडेर पर
अपने नन्हे बच्चों को अपनी अंक में छुपाये हुए
कोई बिल्ली आयेगी और दबोच ले जायेगी
अपने क्रूर हत्यारे पंजों में।

कौन जानता है कि
अनजान सड़क पर चलती हुई लड़की को
कोई क़ैद कर ले जायेगा अपनी गिरफ़्त में
और लोग चुपचाप खड़े देखते रहेंगे एक दूसरे का मुँह।

कौन जानता है कि
समय से बाहर इसी समय में
हम इतने स्वार्थी और आत्ममुग्ध हो जाएंगे कि
पड़ोसी के दिवंगत होने की भी ख़बर नहीं मिलेगी
और हम चाँद, मंगल पर रहने की सोच रहे हैं।

कौन जानता है कि
कल तक जो घर आया करता था डाकिया
अब शायद दोबारा कभी नहीं आएगा
न आयेगी छोटे-छोटे पैकेटों में बंद कोई खुशियाँ।

कौन जानता है कि
जिनके लिए तमाम दरवाज़े
बंद कर दिये गए हों एक षड़यंत्र के तहत
तब भी कुछ खिड़कियाँ खुली रह ही जाती हैं
एक अंतिम उम्मीद की तरह।

कौन जानता है कि
हम भी बीत जाएंगे एक दिन उसी मानिंद
जैसे एक समय बाद बीत जाती है ठंड
जैसे बीत जाता है समय
और हमें पता भी नहीं चलता।

मैंने तमाम आवाजें दीं

मैंने तमाम आवाजें दीं
किसी ने कुछ नहीं कहा
आँगन में मुरझाई हुई तुलसी ने
मुंडेर पर नीरव एकालाप करती चिड़िया ने
पेड़ की किसी शाख पर
फ़ल कुतरती गिलहरी ने
पिंजरे में कैद तोते और न बाँक दे रहे मुर्गे ने
ओसारे में खूँट पर बंधे हुए दुधमुंहे बछड़े ने
उगते हुए सूरज और न अस्त होते रवि ने
ज्येष्ठमास की चिलचिलाती धूप और
न रात्रि की शीतल चाँदनी ने
नदियों ने और न चुपचाप बह रहे झरनों ने
दूधवाले अखबार वाले और न डाकिये ने
बाजारों में कानफ़ोड आवाजों की भीड़ ने
रोज आँगन बुहारने आते सफ़ाई वाले ने
ताजा सब्जी घर पहुँचाने वाले किसान ने
नुक्कड की चाय पान और समोसे वाले ने
फ़ुटपाथ पर छाते के नीचे
रोजी चलाने वाले मोची ने
आसमान छूती बहुमंजिला इमारत का
निर्माण करते प्रवासी मजदूर ने
स्कूल कॉलेज यूनिवर्सिटी के किसी चौकीदार ने
रिक्से-टेक्सी और बस ट्रेन आदि के
अचानक थमे हुए पहियों ने
मंदिर मस्ज़िद गिरिजाघर में
प्रार्थना कर रहे अनुयायियों ने
मैंने तमाम आवाजें दीं
किसी ने कुछ नहीं कहा
चुप्पियों और भयावह अंधेरों के बरक्स
रौशनी की उम्मीद में सब के सब
चेहरे पर उदासी लिए मौन खड़े थे हो निरुपाय।

युद्ध और बुद्ध

युद्ध की राह में
हिंसा, बर्बरता और विनाश होता है
बुद्ध की राह में
प्रेम, सौहार्द और शांति मिलती है

युद्ध की राह चुनने वाले
चाहे जो भी हो जायें
मनुष्य तो कभी हो नहीं सकते

बुद्ध की राह चुनने वाले
चाहे जो भी हो जाये
अपना मनुष्यत्व कभी नहीं छोड़ते
युद्ध और बुद्ध
दोनों में से हम किसको चुनते हैं
यह अपनी निजता है कि
हम मनुष्य बनना चाहते हैं
या फिर बर्बर हिंसक विनाशक

अधिक वही ठहरता है
जो बुद्ध की राह पर चलता है
युद्ध का संकेत विनाश तक ले जाता है। स्व